दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

(Hindi Literature)

टेस्ट–5

(प्रश्न पत्र-I)

DTVF / OPT-23 **HL-2305**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time Allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक : 250* *Maximum Marks : 250*

नाम (Name): Praduman Kumar

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 20/07/2023

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2023] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2023]:

0	8	1	1	4	9	2

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) हिन्दी भाषा का क्षेत्र

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा, राजभाषा तथा संपर्क भाषा है। यह भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। तथा इसकी लिपि देवनागरी है।

हिन्दी भाषा के क्षेत्र

प्राथमिक क्षेत्र :- जहाँ हिन्दी मूल भाषा, या मातृभाषा है वे प्राथमिक क्षेत्र कहलाते हैं इसमें भारत के 10 राज्य आते हैं जिनमें उत्तरप्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, हरियाणा, राजस्थान आदि हैं।

द्वितीय क्षेत्र - इन क्षेत्रों में हिन्दी द्वितीयक भाषा के रूप में प्रयोग की जाती है। यह भारत के मध्य के 5-6 राज्य आते हैं जैसे -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, ओडिशा आदि।

तृतीयक क्षेत्र - जहाँ हिन्दी काम-चलाऊ प्रकार की होती है वहाँ तृतीयक क्षेत्र कहलाता है जैसे - तमिलनाडु आन्ध्रप्रदेश, केरल आदि

अतः हिन्दी लगभग सम्पूर्ण भारत में किसी न किसी रूप में प्रयुक्त होती है। इसलिए हिन्दी को सम्पर्क भाषा का दर्जा दिया गया है।

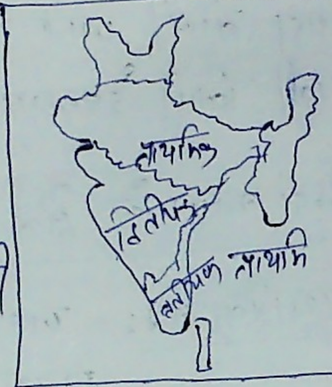

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के सुधार के प्रयासों में 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना 1893 बनारस में कि गयी थी जिसका उद्देश्य हिन्दी का प्रचार, प्रसार, एवं विकास कर इसको राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाना था।

* नागरी प्रचारिणी सभा ने हिन्दी के पारिभाषिक शब्दावली के विकास में योगदान दिया है।

* सभा ने हिन्दी के सुव्यवस्थित व्याकरण निर्माण में भूमिका निभाई जिसमें किशोरीदास बाजपेयी तथा कामताप्रसाद गुरु उल्लेखनीय है।

* हिन्दी के वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रचारिणी सभा ने "साइंटिफिक ग्लोसरी" नामक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

स्थापना की जिसमें वैज्ञानिक विषयों से सम्बन्धित शब्दों को हिन्दी में अनुवाद किया गया था।

काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने अविस्मरणीय योगदान दिया है तथा इसका 100 वर्षों का कार्यकाल हिन्दी विकास को समर्पित है इसलिए ही सरकार ने इसे राष्ट्रीय महत्व की 'सभा' का दर्जा दिया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी भाषा का मानकीकरण और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

मानकीकरण से तात्पर्य भाषा के स्पष्ट, शुद्ध एवं आदर्श रूप का धारण करने से है मानकीकरण प्रक्रिया में भाषा परिनिष्ठित भाषा का रूप धारण कर लेती है।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती पत्रिका के माध्यम से हिन्दी के मानकीकरण में तथा व्याकरणिक लेखन में विशेष योगदान दिया है।

द्विवेदी योगदान -

(1) द्विवेदी जी ने माना है कि परसर्गों को संज्ञा से अलग करके लिखा जाना चाहिए
रामने > राम ने

(2) सर्वनाम के साथ परसर्गों को सटा के लिख सकते हैं
मुझमें, तुझमें, तुममें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(*) इन्होंने विभिन्न क्रियापदों को हटाने का सुझाव दिया है जैसे- काटिये, को कीजिये लिखना चाहिए।

(*) शब्दों को शीर्षरेखा युक्त लिखा जाना चाहिए।

(*) मानक व्यवस्था में संस्कृत व्याकरण का अनुसरण किया जाना चाहिए।

आचार्य द्विवेदी जी हिन्दी के विकास में अग्रणी रहे तथा इन्हीं के प्रयासों से हिन्दी का अपना सुव्यवस्थित व्याकरण बन पाया। जिसमें कामताप्रसाद गुरु का भी विशेष योगदान रहा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) भाषा और बोली में अंतर

भाषा बोली का ही परिनिष्ठित एवं मानक रूप होता है। जिसमें बोली परिष्कृत, आदर्श रूप ग्रहण कर लेती है जिसकी सुस्पष्ट लिपि भी बन जाती है जैसे - हिन्दी भाषा है तथा हरियाणवी, भोजपुरी बोली है।

भाषा	बोली
(*) मौखिक तथा श्रव्य होती होती है।	लिखित तथा देखने योग्य होती है
(*) सुव्यवस्थित व्याकरण होता है।	व्याकरण नहीं होता है
(*) उपयोग किये जाने वाला क्षेत्र व्यापक होता है	क्षेत्र सीमित होती है
(*) भाषा लिपि के लिए अनिवार्य शर्त है	भाषा के संरक्षण के लिए लिपि अनिवार्य है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

यह विभिन्न क्षेत्रों-शिक्षा, कार्यालय, सभा, न्यायालय में प्रयुक्त होती है।	यह मूलत: बोलने रूप पर होती है तथा स्थानीय होती है।
* यह बोली का परिनिष्ठित परिष्कृत स्वरूप धारण कर लेती है	* यह भाषा की आरम्भिक अवस्था होती है

भाषा तथा तथा बोली आपसी अन्तर्सम्बंध बनाती है तथा दोनों का एक-दूसरे से अस्तित्व है। एक-दूसरे के विकास को बढ़ावा देती है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'हरियाणी' बोली

हरियाणी हरियाणा राज्य की बोली है यह बहुत बांगरू नाम से प्रसिद्ध था इसलिए इसे भी बांगरू कह दिया जाता है चूंकि करनाल क्षेत्र बांगर क्षेत्र है इसी के नाम से इसका नाम पड़ा।

हरियाणी प्रायः पश्चिमी उपभाषा की वर्ग की बोली है जिसका क्षेत्र पानीपत कुरुक्षेत्र, करनाल, गुड़गांव, रोहतक आदि है। इसपर पर पंजाबी बोली का भी प्रभाव देखा जाता है

विशेषताएं

* अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति होती है।
  धोखा > धोका
* "ण" शब्दों को साथ के प्रयोग होता है न कम देखने को मिलता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पानी > पाणी

* कहाँ के लिए किते का प्रयोग होता है।
* शब्दों/शब्दों में "के" लगाने की प्रवृत्ति होती है
  के कते,
* ऐ, औ प्रायः ए, ओ रूप में प्रयुक्त होती है। औरत > ओरत
* "ग", बहुला भाषा है, लगो, भागो,
* र, य, ड आपस में मिल जाते हैं
  चपराली > चपड़ाली

हरियाणी / पाश्चेनी बोली

है जिस कारण इसपर पंजाबी एवं अधिकतर खड़ीबोली (पश्चिमी U.P) का प्रभाव स्पष्ट दिखता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) अपभ्रंश की व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपभ्रंश का अर्थ होता है भ्रष्ट भाषा यह संस्कृत के सरलीकरण की प्रक्रिया की तीसरी अवस्था की भाषा है जिसका काल 5वीं सदी से 11वीं सदी तक है तथा आगे यह प्रारंभिक हिन्दी में मिल जाती है।

अपभ्रंश में आगे संस्कृत सरलीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई तथा इसी ने आगे आधुनिक खड़ी बोली एवं अन्य भाषा का आधार तैयार किया।

व्याकरणिक विशेषताएँ

वचन → अपभ्रंश में वचन प्रक्रिया में संस्कृत के द्विवचन का लोप होने लगा है हालांकि कहीं-कहीं इसका प्रयोग नजर आता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जैसे- सोतो

अन्यथा द्विवचन बहुवचन में ही समाहित हो गया था।

लिंग - लिंग व्यवस्था में भी यहाँ सिर्फ स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग मिलता है जबकि नपुंसकलिंग यहाँ नहीं मिलता वह पुल्लिंग में ही समावेशित हो गया है।

कारक व्यवस्था - कारक व्यवस्था में यहाँ महत्वपूर्ण मोड आता है यहाँ संस्कृत के आठ कारकों की जगह सिर्फ 3 तीन कारकों का प्रयोग होता है. जैसे- कर्ता, कर्म एवं सम्बोधन के लिए एक रूप, करण, अपादान के लिए एक रूप तथा सम्प्रदान, संबंध के लिए एक रूप मिलता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विभक्ति - यहाँ निर्विभक्तिक प्रयोग दिखता है क्योंकि विभक्ति का प्रयोग बंद होने लगा है।
हिंदी विभक्ति से सभी परसर्गों का काम

परसर्ग - अपभ्रंश में परसर्गों का स्वतंत्र विकास हुआ तथा प्रायः विभक्ति समाप्त होने लगी।

रामः , राम ने
श्यामः श्याम ने.

सता / सर्वनाम - सर्वनाम जैसे- म्हार, तोहर, ओकर जैसे पदों का प्रयोग शुरू होने लगा था तथा परसर्ग सर्वनाम से हटने लगे तथा सर्वनाम में कहीं-२ परसर्ग पूर्ववत् प्रयोग करते हैं।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अपभ्रंश में सरलीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई तथा आधुनिक हिन्दी में भी जो व्याकरणिक संरचना मिलती उसकी शुरुआत यहीं शुरु हुई थी जैसे एकवचन, बहुवचन एवं पुल्लिंग-स्त्रीलिंग का प्रयोग। अतः आधुनिक हिन्दी में अपभ्रंश का गहरा योगदान रहा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में सेठ गोविन्ददास के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास को स्वाधीनता आन्दोलन के साथ-साथ बढ़ावा मिला तथा अनेकों नेताओं, पार्टी, एवं संस्थाओं ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसमें सेठ गोविन्द दास का नाम भी उल्लेखनीय है जो युवावस्था से राष्ट्रभाषा विकास में लग गये एवं जीवन पर्यन्त लगे रहे।

* सेठ गोविन्द दास ने 20 वर्ष की अवस्था में 1916 में शारदा भवन लाइब्रेरी की स्थापना की तथा यह हिंदी से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों के अनुवादित पुस्तक उपलब्ध कराई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

* गोविन्ददास ने भारत भ्रमण कर द्वार-द्वार घूमकर हिन्दी का प्रचार प्रसार किया।

* उनका मानना था कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा होनी चाहिए तभी स्वतंत्रता आन्दोलन को तीव्र गति मिलेगी।

* गोविन्ददास का महत्वपूर्ण कथन - "जब आप पूरे मन, वचन, कर्म से हिन्दी के विकास में लग जाओगे तब आप हिन्दी प्रेमी कहलाओगे।"

* गोविन्द जी ने अनेक पत्रिकाओं का भी प्रकाशन किया जिसके माध्यम से हिन्दी विकास को बढ़ावा मिला।

* उन्होंने जीवनपर्यन्त हिन्दी के विकास में लगा दिया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सेठ गोविन्द दास का हिन्दी के विकास में योगदान अविस्मरणीय है एवं आधुनिक हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में इनके द्वारा किये योगदान को सदा याद किया जाता रहेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी की लिंग-संरचना से जुड़ी समस्याओं पर विचार कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लिंग संरचना में वाक्य में प्रयुक्त कालिंग का पता लगाया जाता है हिन्दी में सिर्फ दो लिंगों को ही मान्यता दी गई है पुल्लिंग, स्त्रीलिंग। नपुंसकलिंग यहां प्रयोग नहीं होता वह अपभ्रंश से ही समाप्त हो गया है।

किन्तु हिन्दी की हिन्दी लिंग संरचनाओं में कुछ समस्याएं आती है जिससे किसी वस्तु का लिंग निर्धारण नहीं हो पाता तथा हाव-भाव आधार पर लिंग निर्धारण किया जाता है।

* कुछ शब्द ऐसे है जो पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग किसी में नहीं रहते बल्कि अनुभव, उच्चारण के आधार पर उनका लिंग निर्धारण किया जाता है
जैसे- दही- घी, दूध, दाढ़

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

* इसी प्रकार सब्जियों में जैसे भिण्डी को स्त्रीलिंग तथा कद्दू को पुल्लिंग माना जाता है। जिसका कोई व्याकरणिक आधार नहीं रहता है

* कुछ पद स्वनिर्धारित रहते है जिनमें कुछ परिवर्तन की अवस्था नहीं होती भले ही उसको धारण एवं उपयोग करने वाला स्त्री लिंग का हो।
जैसे- प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, राज्यपाल आदि को पुल्लिंग माना जाता है।

* एक अन्य समस्या लिंग परिवर्तन के साथ क्रिया के बदलने की होती है जिससे लिंग में परिवर्तन करने से वाक्य की क्रिया भी परिवर्तित हो जाती है।
जैसे → लड़के जाते है।
→ लड़कियाँ जाती है।
लिंग क्रिया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इस प्रकार हिंदी में कुछ शब्दों में लिंग निर्धारण में समस्या आती है। हालांकि उनको उभयलिंगी जैसे श्रेणी में रख का निराकरण किया जा सकता है। ~~अन्यथा~~ अन्यथा हिंदी की लिंग संरचना पूर्ण रूप से स्पष्ट है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

3. (क) देवनागरी लिपि को वैज्ञानिक लिपि कहने के औचित्य पर विचार कीजिये। 20

अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की भाषा हिंदी तथा लिपि देवनागरी है। जो ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई है तो कुटिलाक्षर लिपि ने जिसे आधार प्रदान किया है।

देवनागरी लिपि को वैज्ञानिक लिपि का दर्जा दिया गया है क्योंकि शाब्दिक एवं व्याकरणिक संरचना इसको वैज्ञानिकता के अनुकूल ठहराती है। जिसमें निम्न विशेषताएं है।

वर्णमाला - देवनागरी लिपि की वर्णमाला क्रमानुसार है जिसमें पहले स्वर आते है अ, आ, ई, ई ... आदि तथा उसके बाद व्यंजन आते है। जबकि रोमन लिपि में ऐसा नहीं है वहां सभी तरह स्वर- उच्चार बिखरे पड़े है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

जैसे - A → पहला, E · पाँचवा, I → नौवाँ

मात्राएं - देवनागरी में मात्राएं भी वैज्ञानिक है। जिसके पूरे ~~मात्राओं~~ शब्द को लिखने की आवश्यकता नहीं होती सिर्फ मात्रा से काम चल जाता है जबकि रोमन में पूरा शब्द लिखना पड़ता है

अमे → ै मात्रा, → AM(E) → पूरा शब्द

शिरोरेखा - सभी शब्द शिरोरेखा युक्त होते है जिससे इनके आपस में भ्रमित होने का खतरा नहीं रहता है जैसे -

→ कपड़ा सूख रहा है।

→ कप डा लू खर हा है।

सीखने में आसान - यदि कोई एक सीधी, एक आड़ी, एक अर्द्धचन्द्र बनाना सीख ले तो प्रायः देवनागरी के सम्पूर्ण शब्द बनाना सीख

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

जाता है।

अ, म, न, भ, ट, च

उच्चारण - देवनागरी में शब्द के अनुसार अनुसार उच्चारण होता है तथा यह उच्चारण सदैव एक समान रहता है रोमन लिपी की तरह अलग-2 शब्द का प्रयोग होता है।

उ, अ — PUT → U → उ उच्चारण

पुत्र आज — BUT → U → अ उच्चारण

प्रत्येक उच्चारण हेतु शब्द - प्रत्येक उच्चारण हेतु एक अलग शब्द है जहाँ की विभिन्न शब्दों में अतिक्रमण नहीं होता है। हर उच्चारण का शब्द देवनागरी वर्णमाला में वर्णित है।

इ, उ, ऊ, ए, ऐ

↓ ↓ ↓ ↓

E U OO [illegible]

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

उपर्युक्त विशेषताएं देवनागरी को वैज्ञानिकता प्रदान करती है जिसके कारण देवनागरी पूर्ण वैज्ञानिक लिपि कहलाती है। तथा यह कहने मे कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि देवनागरी वैज्ञानिकता के स्तर पर विश्व की किसी भी लिपि से कमतर नहीं है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के नामकरण पर प्रकाश डालिये। 15

भाषा के उच्चारण को व्यक्त करने हेतु प्रयोग किये जाने वाले प्रयुक्त चिह्नों के सामूहिक वर्ग को लिपि कहते है उसी प्रकार हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है।

देवनागरी लिपि के नाम से संबंधित विभिन्न मतों, एवं विचारधाराएं है जो अपने-2 तरीके से उनका वर्णन करती है।

देव - कुछ विद्वान इसे देवनागरी नामकरण किये जाने का कारण मानते है कि ये देवों की भाषा है तथा विभिन्न धार्मिक ग्रंथ इसी लिपि में लिखे

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

गये थे जिस कारण इसे देवों की लिपि देवनागरी लिपि कहा जाता है।

नागर - अन्य अवधारणा को मानने वालों का मानना है कि चूंकि हिन्दी का विकास नगरों में हुआ है विभिन्न पंडितों ने इसे लिखा है वे प्रायः नगरों में रहते थे जिस कारण इसे देवनागरी कहते हैं।

चन्द्रगुप्त II - कुछ विद्वानों का मानना है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा देवनगर बसाया गया जो पाटलीपुत्र के समकक्ष था तथा इस नगर में इस लिपि का प्रयोग किया जाता था जिस कारण इसका नाम

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

देवनागरी पड़ा।

काशी - अन्य पक्ष में इसको विभिन्न धार्मिक स्थलों वाराणसी, काशी, बनारस में प्रयोग किये जाने के आधार पर इस के नामकरण का औचित्य ठहराते हैं।

देवनागरी के नामकरण से संबंधित अनेकों विचारधारा एवं मत हैं तथा कोई भी पूर्णतः सत्य नहीं है किन्तु से नगर एवं धार्मिक स्थलों के प्रमाण के आधार पर इसके नामकरण का औचित्य ठहराया जा सकता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) सूफी काव्यधारा में प्रयुक्त अवधी की भाषिक प्रवृत्तियों को रेखांकित कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अवधी का प्रारंभिक प्रयोग रोडा कृत राउलवेल में मिलता है यह ~~अप~~अपभ्रंश से निकली बोली है। जिसका क्षेत्र अयोध्या फैजाबाद के आसपास का क्षेत्र है

अवधी की पहली प्रमुख रचना मुल्ला दाऊद की चंदायन या लोरिकहा है तथा सूफीयों ने इसको परिमार्जित किया। व जिसमें मलिक मोहम्मद जायसी की पद्मावत प्रमुख रचना है

सूफी अवधी की भाषिक प्रवृत्ति -

* उकारबहुला भाषा है सूफीयों ने इसका ज्यादा प्रयोग किया
  ex- मकु तोहि मारका

* उन्होंने संज्ञा के तीनों (3) रूपों का प्रयोग अपने साहित्य में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किया है।

जैसे- लरिका, लरिकवा, लरिकउना

* ऐ, औ उच्चारण का शाब्दिक प्रयोग सामान्यतः सूफीयों में मिलता है ex- मरो तो मरौं, जियो एक साथा

* विशेषण का प्रयोग यहा, संज्ञा के अनुरूप नहीं करते बल्कि उकारबहुल का ध्यान नजर आता है तथा विशेषण प्राय: उकारांत रहते है।
  ex- छोट लरका, छोट बिटिया

* इनके क्रिया रूप भोजपुरी से मिलते जुलते है।

  वर्तमान काल - ल रूप (करल)
  भूतकाल - त रूप, (सुतल)
  भविष्य काल - ब रूप, (करब)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

* सूफीयों ने अवधी में प्रतीकात्मकता एवं बिम्बात्मकता का भी सान्निवेश किया है

* ठेठ अवधी को बढ़ावा दिया
जैसे - जान मवहत नीहता

सूफीयों द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली अवधी भाषिक एवं साहित्यिक दोनों स्तर पर कलात्मकता के चरम स्वरूप का दिग्दर्शन करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) भारत की भाषा-समस्या के संदर्भ में 'त्रिभाषा सूत्र' की अवधारणा पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखियेः 10 × 5 = 50

(क) साहित्यिक अवधी की सीमाएँ

अवधी अर्द्धमागधी अपभ्रंश से विकसित हुई पूर्वी उपभाषा की प्रसिद्ध बोली है जिसका क्षेत्र अयोध्या एवं फैजाबाद है। यह इस क्षेत्र की आम बोली कोसल से विकसित हुई बोली है।

सीमाएं

ठहराव - अवधी भाषा में ब्रजभाषा जैसी चंचलता की कमी है इसमें ठहराव अधिक है चूंकि यह औदात्य एवं गरिमा सम्पन्न भाषा है। इसी कारण इसमें प्रबंधकाव्यों की अधिक रचना हुई है जैसे- रामचरित मानस, पद्मावत

लचीलापन - अवधी में लचीलापन तो है किन्तु यह ब्रजभाषा की तुलना में कम है जिस कारण यह

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अन्य भाषिक शब्दों के ग्रहण में सक्षम मानी है।

तीव्र भावना अभिव्यक्ति - अवधी से तीव्र भावना की अभिव्यक्ति सम्भव नहीं है इसलिए इसमें मुक्तकों की संख्या कम है जबकि ब्रजभाषा में ज्यादा मुक्तक रचे जाते थे इसलिए तुलसी जी भी मुक्तक के लिए ब्रजभाषा ~~का भाषा~~ का प्रयोग करते है

आधुनिकता की कमी - आधुनिकता की कमी के कारण अवधी, 20 शताब्दी में अपने महत्व को खो दिया है। तथा खड़ीबोली ने अपनी जगह बनाई।

अवधी में कुछ सीमाएं है किंतु भी अवधी गरिमा, ओजंत प्रबंधकाव्य के लिए उपयुक्त रही है तथा जनभाषा की बोली रही है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) राजभाषा हिंदी और देवनागरी अंक

राजभाषा राजकीय कामकाज में प्रयुक्त होने वाली भाषा होती है जैसे संविधान अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की भाषा हिंदी तथा लिपी देवनागरी है। एवं Ar-120(1) के तहत संसद की भाषा भी हिन्दी है। देवनागरी हिंदी की लिपी है।

राजभाषा

→ शासन के कामकाज में प्रयुक्त होती है।
→ शासन में एकरूपता लाती है।
→ राष्ट्र को एकसूत्र में बांधने हेतु प्रेरित करती है।
→ विभिन्न समय में विभिन्न भाषाओं ने यह दर्जा पाया है जैसे -

मुगल → फारसी, ब्रिटिशकाल → अंग्रेजी, स्वतंत्रता पश्चात भारत → हिन्दी

देवनागरी अंक - देवनागरी ब्राह्मी लिपी से ~~विकसित~~ विकसित हुई लिपि है जो कुटलाक्षर के माध्यम से विकसित

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हुई है।

अंक → देवनागरी अंकों को प्रयोग वर्तमान में घट गया है ये इस प्रकार हैं-

9 - एक   3 - तीन   5 पांच   7 - सात
2 - दो   4 - चार   6 - छः   8 - आठ
9 - नौ   10 - दस

अतः भारत की राजभाषा हिन्दी तथा लिपि देवनागरी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 19वीं शताब्दी में 'खड़ी बोली' के विकास में प्रेस की भूमिका

19 वीं शताब्दी में खड़ीबोली के बोली के विकास में अनेक राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक, परिस्थितियां मौजूद थी जिन्होंने इसके विकास के प्रति किया जिसमें सबसे महत्वपूर्ण प्रेस की भूमिका रही।

भूमिका

* हिन्दी में पहला समाचार पत्र उदंत मार्तण्ड था जिसका प्रकाशन 1826 में हुआ
* ईसाई मिशनरी ने धर्म के प्रचार हेतु प्रेस का सहारा लिया तथा बाईबिल को हिंदी में अनुवाद कर प्रकाशित किया।
* राजाराम मोहन राय ने भी बंगदूत हिन्दी पत्र का प्रकाश किया एवं द्विवेदी जी सरस्वती पत्रिका भी महत्वपूर्ण है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

* भारतेंदु ने हरिश्चन्द्र मैगजीन का प्रकाशन किया जिसने खड़ीबोली को बढ़ावा दिया तथा यह कहा गया - हिन्दी नई चाल में चली 1873 में ।

* सामाजिक सुधार आन्दोलन में प्रेस की स्वतंत्रता एवं उपयोग को बढ़ावा दिया गया जिसमें सनातन धर्म पत्रिका आदि उल्लेखनीय है।

खड़ीबोली के विकास में प्रेस का अतुलनीय योगदान रहा तथा इसने एक क्षेत्रीय बोली को राष्ट्रभाषा तक पहुँचा दिया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) 'खड़ी बोली आन्दोलन' में अयोध्या प्रसाद खत्री की भूमिका।

खड़ी बोली के विकास में अयोध्या प्रसाद खत्री का विशेष योगदान है यह बिहार के मुजफ्फरपुर के रहने वाले थे तथा मूलतः ब्रजभाषा के कवि थे।

खत्री जी ने शुरुआत में खड़ी बोली को अक्षय काव्य माना था किंतु धीरे-धीरे इसका समर्थन करने लगे तथा अन्ततः खड़ीबोली के विकास में लग गये।

* खत्री जी ने हिन्दी में "हिन्दी व्याकरण" मौलवी साहब का साहित्य आदि रचनाएं रची।

* खत्री जी द्विवेदी जी के समकालीन थे परिणाम स्वरूप वे इनसे प्रभावित थे क्योंकि द्विवेदी जी सरस्वती पत्रिका के माध्यम से हिन्दी के विकास हेतु अनेक लेख लिखते रहे जिनसे खत्री जी को

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

... प्रभावित थे।

- खत्री जी ने भारत भ्रमण कर हिन्दी के प्रचार प्रसार को बढ़ावा दिया एवं इसे राष्ट्रभाषा बनाने हेतु पर्याप्त आधार तैयार किया।

अतः यह कह सकते हैं कि खड़ी बोली के विकास में खत्री जी की गहरी प्रेरणा विद्यमान रही है तथा इनका योगदान सराहनीय एवं अविस्मरणीय है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राजभाषा अधिनियम, 1963

संविधान के अनुच्छेद 351 में कहा गया है कि संघ का कर्तव्य है हिन्दी का विकास करना तथा अनुच्छेद- 344 में एक राजभाषा समिति के गठन का प्रावधान दिया है यह कार्य राष्ट्रपति को सौंपा गया।

पारिभाषिक स्वरूप

1955 में राजभाषा आयोग का गठन किया गया जिसके कहने पर 1963 में राजभाषा अधिनियम पारित किया गया। जिसमें निम्न प्रावधान हैं।

* हिन्दी के प्रचार- प्रसार को बढ़ावा देना।
* विभिन्न भाषी राज्यों के मध्य सहयोग को बढ़ावा देना तथा हिन्दी अनुकूल माहौल तैयार करना
* इसी तत्वावधान में केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय का गठन किया गया।
* हिन्दी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

को बढ़ावा देना एवं अनुवाद कार्य को प्रगतिशील रखना।

⊗ समय-समय पर हिन्दी के विकास का पुनरीक्षण करना।

हिन्दी के विकास में राजभाषा अधिनियम 1963 सराहनीय कदम है तथा इसने हिन्दी के विकास में प्रभावी भूमिका निभाई है। दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ इसे और बढ़ावा दिया जाने की आवश्यकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) देवनागरी लिपि के मानकीकरण के विभिन्न प्रयासों पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) मानक हिंदी की कारक-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 20

मानक हिंदी की कारक व्यवस्था संस्कृत कारक व्यवस्था से संबंधित है संस्कृत की तरह हिंदी में भी आठ कारकों को मान्यता दी गई है हालांकि अपभ्रंश में आठ की जगह तीन कारक ही प्रयोग किये जाते है।

हिंदी में कारक व्यवस्था के आठ प्रकार माने गये जो निम्नवत् है। कारक व्यवस्था - संज्ञा एवं सर्वनाम की स्थिति निर्धारित करने में भूमिका निभाते है।

जैसे - राम ने रावण को मारा।

राम व रावण की स्थिति को कारक "ने" तथा "को" ने निर्धारित किया है।

कर्ता - वाक्य में कार्य करने को

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बताता तथा कारक माध्यम से इसकी निर्धारित की जाती है जो प्राय: ने से पहले होता है

जैसे- मैंने खाना खाया। (मैं को चिन्हित)

कर्म - वाक्य में कर्ता द्वारा होने वाले काम को व्यक्त करता है। को से प्रदर्शित होता है

जैसे- राम ने रावण को मारा।

करण - इसमें कार्य करने हेतु कर्ता द्वारा प्रयुक्त उपकरण या भाव का प्रयोग किया बताता है

राम ने रावण को तीर से मारा।

सम्प्रदान - कार्य के होने का उद्देश्य को बताता है तथा उसकी स्थिति निर्धारित करता है।

~~सत्य~~ सच्चाई की जीत के लिए राम ने

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रावण को मारा।

अपादान - वाक्य में घटित हुई घटना के स्थान को बताता है तथा उसकी स्थिति निर्धारित करता है।

राम ने रावण को युद्ध में मारा।

संबंध - इसमें कर्ता के कार्य के साथ साथ को दिखाता है

इसमें का, की, के का प्रयोग होता है।

जैसे - रावण व राम के शत्रुतापूर्ण संबंध थे।

अपादान - में के प्रयोग को दिखाता है तथा कार्य को सम्पन्न होने की ओर इशारा करता है

सम्बोधन - इसमें किसी को सम्बोधित करते हुए प्रयुक्त होने वाले शब्दों को दिखाया जाता है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसमें हे, अरे का प्रयोग होता है
जैसे- हे रावण अपना दोष कबूल कर ले।

हिन्दी की कारक व्यवस्था
संस्कृत के समान एवं संस्कृत से विकसित हुई है जो स्पष्ट, एवं सरल है। तथा आठों कारक का प्रयोग हिन्दी में किया जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

अवधी अयोध्या एवं फैजाबाद के आस-पास प्रयोग की जाने वाली भाषा है। जिसकी महानतम कृति तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस है।

किन्तु इससे पहले सूफीयों ने इसमें महत्वपूर्ण योगदान दिया है अवधी की प्रारम्भिक कृति रोडा कृत राउलवेल है।

(*) हिन्दी में प्रेमाख्यानों को रचने की परम्परा भी जिसमें दोहा तथा चौपाई रूढ सी हो गई। इसी क्रम में सूफीयों ने अपनी रहस्यवादी मान्यताओं का प्रचार करने के लिए इन्हीं प्रेमाख्यानों को अपना आधार बनाया तथा सूफी के मान्यताओं के साथ अवधी का विकास हुआ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

* इस क्रम में पहली रचना जिसने अवधी को ~~लोकभाषा~~ लोकभाषा से काव्य-भाषा के रूप में स्थापित किया उसमें मुल्ला दाऊद की चन्दायन लोरिकहा है।

* किन्तु इस क्रम सबसे अधिक योगदान मलिक मोहम्मद जायसी का है जिनकी कृति पद्मावत है। जिसमें इन्होंने सूफी तन्मयता का परिचय दिया तथा अवधी को सूफी संवेदना के साथ उकेरा। उदाहरण द्रष्टव्य है -

"यह तन जारौं छार के कहु कि पवन ~~उड़ाओं~~ उड़ाव
मकु तेहि मारग उड़ि परे, कन्त धरे जह पाव"

पद्मावत की महत्वपूर्ण विशेषता इसकी संवेदना का चरम स्तर है।

* सूफीयों के अन्तर्गत अवधी का विकास इसके आगे भी जारी रहा तथा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इसी क्रम में उस्मान की चित्रावली तथा शेखनबी की ~~[illegible]~~ ज्ञानदीप प्रमुख रचना है।

अतः यह कह सकते हैं कि अवधी ने सूफीयों के अन्तर्गत संवेदना एवं कलात्मकता का चरम स्तर का दिग्दर्शन किया है। सूफीयों को अवधी के विकास में गहरी प्रेरणा विद्यमान रही है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अवधी और भोजपुरी के अंतर पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अवधी हिन्दी की पूर्वी उपभाषा वर्ग की सबसे प्रसिद्ध बोली है जबकि भोजपुरी बिहारी हिंदी की बोली है। दोनों ही कालक्रम स्तर पर महत्वपूर्ण है किन्तु अवधी का साहित्यिक विकास भोजपुरी से ज्यादा है।

वहीं भोजपुरी के बोलने वालों की संख्या अवधी से कहीं अधिक है जो भारत से बाहर, मॉरीशस, फीजी, टैबैगो में भी प्रयुक्त होती है।

अवधी एवं भोजपुरी में काफी अन्तर है

अवधी - व्याकरणिक विशेषता में अन्तर

→ संज्ञा के तीन रूप रूप मिलते है
लरिका, लरिकवा, लरिकउना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

→ उकारबहुला भाषा है।

→ विशेषण उकारान्त होते है।
छोट लरका, छोट बिटियां

→ अल्पप्राणीकरण की प्रवृत्ति मिलती है।

→ ऐ, औ का अधिक प्रयोग होता है।
औरत, अर

→ एकवचन से बहुवचन के लिए [struck-through] न्ह, न प्रयोग होता है। [struck-through]

→ स्त्रीलिंग बनाने हेतु इन, इयां का प्रयोग होता है। बेटा-बिटियां

भोजपुरी

→ क्रियारूप - भूतकाल - ल रूप
वर्तमान - त रूप
भविष्यकाल - ब रूप

→ ण का प्रयोग नहीं मिलता

→ विशेषण में उ, उन का प्रयोग होता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

* एकवचन से बहुवचन के लिए वाँ, र, प्रयोग।

* स्त्रीलिंग बनाने में इन, इयाँ का प्रयोग

* सर्वनाम - हमरा, तोहरा, ओकरा प्रयोग

अवधी एवं भोजपुरी दो अलग बोली है जिनमें विभिन्न असमानताएं है किंतु इनमें पर्याप्त समानता भी देखती है जैसे दोनों के विशेषण एवं क्रियारूप समान है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

नो.